पंचपर्व का चतुर्थ दिवस गोवर्धन पूजा

धनतेरस के बाद चतुर्थ दिवस जो होता है वह गोवर्धन पूजा का होता है। इसे पंच पर्व का चतुर्थ दिवस कह सकते हैं। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन की पूजा, गौ-पूजा और अन्न-कूट होता है। अन्नकूट में चंद्र दर्शन अशुभ माना जाता है। यदि प्रतिपदा में द्वितीया हो तो अन्नकूट अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन प्रातः तेल मल कर स्नान करना चाहिए। पूजन का समय कहीं प्रातःकाल है तथा कहीं दोपहर को। गाय, बैल आदि पशुओं को स्नान कराया जाता है। उनके पैर धोए जाते हैं। फूल, माला, धूप, चंदन आदि से उनका पूजन किया जाता है। गायों को मिष्ठान्न खिलाकर उनकी आरती करके प्रदक्षिणा ली जाती है। कई तरह के पकवानों का पहाड़ बनाकर बीच में श्रीकृष्ण की मूर्ति रख कर पूजा की जाती है। कहीं-कहीं गोबर से गोवर्धन व कृष्ण की मूर्ति बनाकर भी पूजा की जाती है। इस दिन संध्या समय दैत्यराज बलि का पूजन भी किया जाता है। पूजन के बाद अन्नकूट की कथा भी सुननी चाहिए। इस पर्व का भी बहुत धार्मिक महत्व है। आईये इस सम्बन्ध में विस्तार से जानें..!!

अन्नकूट-गोवर्धन पूजा : 15 नवम्बर 2020

गोवर्धन पूजा का महत्व-

इसका प्रारम्भ 5 हजार वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत की तलहटी के उद्धार और कृषि साधनों के नवीनीकरण के अवसर पर हुआ था। इस पर्व के प्रारम्भ होने से पूर्व ब्रजमण्डल की जनता ''देव मातृक'' थी, अन्न के लिए वर्षा पर निर्भर रहती थी। यद्यपि उसके समीप गोवर्धन पर्वत सदृश जलस्तोत्र से पूर्ण पर्वत था जिसका समुचित उपयोग करने पर अच्छी खेती हो सकती थी किन्तु लोगों का ध्यान इस ओर न था। वे वर्षा की प्रतीक्षा करते, वर्षा के देव इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करते और उसी की कृपा पर निर्भर रहते थे। बालक कृष्ण ने- जिनका जन्म ही लोकाभ्युदय के लिये हुआ था- इसके विरोध में लोगों को संगठित किया। गोवर्धनोद्धार के लिए सामुहिक प्रयाण हुआ। स्तोत्रों का जो जल अभी तक व्यर्थ ही चला जाता था, गोवर्द्धन के आंचल में फैली हुई जो वनस्पति या शस्य समृद्धि लोगों की उपेक्षा से प्रतिवर्ष नष्ट हो जाती थी, जो सैकड़ों बीघा भूमि बंजर पड़ी थी, उ स

सबक ी ओर उन्होंने समुचित ध्यान दिया और व्यवस्था की। इससे सम्पूर्ण ब्रज-मण्डल धनधान्य से परिपूर्ण हो गया।

कार्य सिद्धि के लिए दैवीबल का आश्रय और अपना शिरतोड़ पुरुषार्थ, दोनों ही साथ-साथ परमावश्यक हैं। जो गोप ग्वाले केवल इन्द्रपूजा रुप दैवी साधन पर ही सदैव निर्भर रहते थे, स्वयं कुछ पुरुषार्थ नहीं करते थे। अतएव वे अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि की समस्या का सफल समाधान न कर पाते थे। भगवान् ने गोवर्धन से वर्षा काल में बहने वाले जल-स्तोत्रों को बृहत्तडाग रुप में बांध कर जहाँ अनावृष्टि के समय सिंचाई का प्रबन्ध किया, वहाँ इन्द्र के कोप से होने वाली अतिवृष्टि की दुःखद बाढ़ में डूबते हुए ब्रज-मण्डल को भी गोवर्धन उठाकर बचा लिया अर्थात्- उसे जल रोधक सुरक्षा बांध के रूप में परिणत करके तथा पर्वतीय ऊँचे स्थानों में आवास की व्यवस्था करके महाप्रलयंकारी संवर्तक मेघों की आप्लावन शक्ति को भी कुण्ठित कर दिया। इस प्रकार जब पशुओं को सदैव भर पेट चारा और विशुद्ध पानी मिलने लगा तो उक्त पर्वत का ''गोवर्धन'' नाम सार्थक हो गया।

गोवर्धनोद्धार की वह सुखद स्मृति आज भी हमारे हृदयपटल में सदैव सुरक्षित है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गोवर्धन पूजा जैसे प्रेरणाप्रद पर्वों की अत्यन्त आवश्यकता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि हमें इस दिन अपनी राष्ट्र की गो=पृथ्वी और गाय दोनों की उन्नति तथा विकास की ओर ध्यान देना चाहिए और इनके संवर्धन के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये। यही इस ''गोवर्धन'' पर्व का महान् सन्देश है।

गोवर्धन पूजा कथा-

प्राचीन काल में दीपावली के दूसरे दिन भारत में विशेषकर ब्रज मंडल में इंद्र की पूजा हुआ करती थी। श्रीकृष्ण ने कहा कि कार्तिक में इंद्र की पूजा का कोई लाभ नहीं इसलिए हमें गऊ के वंश की उन्नति के लिए पर्वत, वृक्षों की पूजा करते हुए न केवल उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए अपि तु पर्वतों और भूमि पर घास-पौधे लगाकर हमें वन महोत्सव भी मनाना चाहिये। इसके सिवा हमें सदैव गोबर को ईश्वर रूप में पूजा करते हुए उसे कदापि नहीं जलाना चाहिए। इसके बदले खेतों में डालकर उस पर हल चलाते हुए अन्नौषणि उत्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से ही हमारे सहित देश की उन्नति होगी।

भगवान श्रीकृष्ण के ऐसे उपदेश देने के पश्चात् लोगों ने ज्यों ही पर्वत, वन और गोबर की पूजा आरंभ की, त्यों ही इंद्र ने कुपित होकर सात दिन की अखंड झड़ी लगा दी परंतु श्रीकृष्ण ने पर्वत को अपनी चितली अंगुली पर उठाकर ब्रज को बचा लिया और इंद्र को लज्जित होने के पश्चात् उनसे क्षमा याचना करनी पड़ी।

गोवर्धन पूजा साधना

जिसके संपन्न करने से घर में जहां अन्न-दूध आदि कभी कम नहीं पड़ता वहीं भगवान कृष्ण के गोवर्धन स्वरूप की कृपा से प्राकृतिक आपदाओं से भी सुरक्षा होती है।

कार्तिक मास की दीपावली के बाद अन्नकूट की पूजा की, जिसे गोवर्धन पूजा भी कहते हैं। प्रातःकाल शरीर पर तेल लगाकर फिर स्नान करना चाहिए। दैनिक पूजा के बाद गाय की पूजा करनी चाहिए। 'गाय' को समृद्धि का प्रतीक माना गया है, और समृद्धि में वर्धन या वृद्धि करने वाले होने के कारण भगवान कृष्ण को गोवर्धन भी कहा गया है। यदि घर में गाय हो तो गाय के शरीर पर लाल एवं पीला रंग लगाना चाहिए, उसकी सींग पर तेल लगाना चाहिए। फिर उसे घर में बने भोजन का प्रथम अंश खिलाना चाहिए। यदि घर में गाय न हो तो किसी भी गाय की पूजा की जा सकती है।

इसके बाद 'गोवर्धन पूजा' (अन्नकूट पूजा) करनी चाहिए। इसके लिए गाय के गोबर से पर्वत की आकृति देकर एक छोटा-सा गोवर्धन पर्वत बना लें, इसे पूजा के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यदि गोबर उपलब्ध न हो, तो अन्न (चावल या गेहूं आदि) की ढेरी के रूप में भी गोवर्धन पर्वत बनाया जा सकता है। इस प्रकार अन्न की ढेरी से बने गोवर्धन को ही अन्नकूट कहते हैं।

गोवर्धन पूजा का अपना विशेष महत्व है। प्राकृतिक विपत्तियों से सावधान रहने की सूचना 'गोवर्धन पर्वत' की कथा से मिलती है। अधिकांश खाद्य पदार्थ गाय के दूध से ही बनते हैं, गाय को घर में अन्न और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। गो पूजन, गोवर्धन पूजा या अन्नकूट पूजा से घर में अन्न, दूध आदि की कमी नहीं होती है। भगवान कृष्ण इस दिन अपनी पूजा करने वाले की अकाल, भूकंप, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा करते हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गोवर्धन पर्वत उठाकर उन्होंने ब्रजवासियों की वर्षा से रक्षा की थी।

शुभ मुहूर्त में अपने आसन पर बैठ जाएं। गोवर्धन पर्वत के चारों ओर हल्दी एवं कुंकुम का लेप बनाकर तीन गोल घेरे बनाएं। इस घेरे के बाहर आठ दिशाओं में आठ स्वस्तिक बनाएं। प्रत्येक स्वस्तिक एवं गोवर्धन पर एक-एक पुष्प निम्न मंत्र बोलते हुए अर्पित करें-

ॐ ह्रीं ह्रीं गोवर्धनाय भद्राय ऐं ऐं ॐ नमः।।

इसके बाद गोवर्धन के सम्मुख एक दीपक प्रज्जवलित करें, धूप-दीप जला दें। फिर पर्वत को चारों ओर मौली से उपरोक्त मंत्र बोलते हुए बांध दें तथा तीन गांठ लगाएँ। फल, बताशा आदि नैवेद्य रुप में अर्पित करते हुए भगवान कृष्ण का स्मरण करें। उपरोक्त दिये निम्न मंत्र का पांच मिनट तक जप करें और चढ़ाएं हुए नैवेद्य को प्रसाद के रूप में स्वीकार करें। ♦♦♦

कल्याणी रक्षा कवच

प्राचीन काल में मारण, वि)षण, षटकर्म प्रयोग आदि तांत्रिककर्म एवं मंत्र गुप्त रखे जाते थे, गुरु योग्य शिष्यों को ही इनका ज्ञान देते थे, लेकिन आज नौसिखिये व्यक्ति इन का दुरुपयोग करने लगे हैं, ये कवच जहॉ एक और आप पर किये गये तांत्रिक प्रयोगों से रक्षा करेगा वही भविष्य में होने वाले किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा से आपकी रक्षा करेगा! अपनी और अपनों की सुरक्षा आपके हाथ.....

न्यौछावर राशि 3000/- रु.

विष्णु और लक्ष्मी में बड़ा कौन?

दीपावली पर हम लक्ष्मी नारायण एवं विष्णु पत्नी लक्ष्मी का पूजन करते हैं। विष्णु का साधक भी अपने इष्टदेव का चिन्तन करता है। विष्णु शेष शैय्या पर विराजमान हैं। सर्प संहारक शक्ति, तामसिकता, क्रोध और शत्रुता का प्रतीक है। वह हजार फण वाले शेष पर शान्ति पूर्वक शयन करते हैं। साधक हजारों सांसारिक कठिनाइयों व बाधाओं के आने पर भी अपनी बुद्धि को स्थिर रखता है, मन को असन्तुलित नहीं होने देता। भगवान भृगु की लात सहकर भी मुस्कराते हैं। परिवार और समाज में सहिष्णुता एक आवश्यक गुण है। यही गुण धीर और गम्भीर होने का परिचय देता है यही महानता की कसौटी है। प्रगतिशील व्यक्ति का चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति ही सबको अपना साथी और मित्र बना सकता है। बात-बात पर जिसको क्रोध आ जाता है, उसके मित्र भी शत्रु बन जाते हैं। सहिष्णुता मानसिक शक्ति के विकास की द्योतक है। यही कारण है कि विष्णु ने सर्व जाति से सम्बन्ध बना रखा है। वह बुरे व्यक्ति से निर्वाह करना जानते है, उन्हें सद्मार्ग पर लगाते हैं। यही साधक भी करने का प्रयत्न करता है।

लक्ष्मी निरन्तर विष्णु के पैर दबाती रहती है, उनकी दासी है। धन उनके पैरों पर गिरता हैं परन्तु वह उनका दुरुपयोग नहीं करते। वह लक्ष्मी के नियन्त्रण में नहीं है उसे ही अपने काबू में रखते हैं। भोग ऐश्वर्य उनके चारों और बिखरे पड़े हैं, परन्तु वह उनमें लिप्त नहीं रहते हैं। भोग में त्याग का उदाहरण उपस्थित करते हैं, कमल उनके हाथ में रहता है जो इस आदर्श व्यवहार का प्रतीक है। वह अपने साधक से ऐसा ही जीवन व्यतीत करने की आशा करते हैं।

यहाँ मुझे एक कथा याद आ रही है- एक बार श्री विष्णु एवं लक्ष्मीजी के मध्य बहस छिड़ गई। बहस का विषय था कि 'हममें से कौन बड़ा है?' विष्णु भगवान का कहना था कि मैं बड़ा, लक्ष्मी का कहना था कि मैं बड़ी। अब इस बात का निर्णय कैसे हो, फैसले के लिये न्यायाधीश चाहिये। दोनों न्यायाधीश की खोज में धरती पर चले आये। चलते-चलते देखते हैं कि सामने से कुछ लोग अर्थी लिये धीरे-धीरे चले आ रहे हैं। विष्णुजी ने उस मुर्दे को ही पंच बनाने का निर्णय कर लिया। मुर्दा और पंच। लक्ष्मीजी सुनकर चकित रह गई। विष्णुजी ने समझाया तो लक्ष्मीजी मुर्दे को न्यायाधीश बनाने के लिए तैयार हो गई।

वे लोग अर्थी को लेकर उनके पाास से गुजर रहे थे कि विष्णुजी ने लक्ष्मीजी से अपना चमत्कार दिखाने के लिये कहा। लक्ष्मीजी उस मुर्दे को ले जा रहे आदमियों के चारों ओर स्वर्ण मुद्रा के रुप में बरसने लगी। लक्ष्मीजी को देखकर लोगों ने मुर्दे को वहीं पटका और लगे स्वर्ण मुद्रा बटोरने। लक्ष्मीजी अपनी इस चमत्कारी स्वाभाविक जीत के लिये बड़े गर्व के साथ विष्णुजी की तरफ देखने लगी। इधर विष्णुजी भी अपनी चिर-परिचित मोहक मुस्कान के साथ मौन खड़े रहे। लक्ष्मीजी बोली-प्रभु। देख लिया, अब तो पता चल गया कि कौन बड़ा है? हाँ मैंने तो दिख लिया, तुम भी देख लो। क्या? लक्ष्मीजी ने आश्चर्य से पूछा- कौन बड़ा है? विष्णुजी बोले कि "तुम्हें तो उन्हीं लोगों ने उठाया जिनमें मैं पहले से ही विराजित था, मगर जिसमें मैं नहीं था, उसने उठाया होता तो मानता कि तुम बड़ी हो। विष्णुजी का अभिप्राय समझ लक्ष्मीजी नतमस्तक हो गई।